SADGATI

'Deliverance'

Screenplay by Satyajit Ray and Amrit Rai
based on the short story by Premchand

Premchand's short story *Sadgati* was published in 1931. The Hindi text is given in volume 4 of *Mānsarovar*, the collected stories of Premchand (Allahabad, various editions). An English translation by David Rubin appears as the title story of Rubin's *Deliverance and Other Stories* (New Delhi, 1990: pp. 241-250).

Satyajit Ray's film based on the short story was shown on Indian television (Doordarshan) in 1981, and subsequently on Channel 4 in the UK.

Andrew Robinson's *The Chess Players and Other Screenplays* (London 1989) includes an English translation of the screenplay of the film, an introduction to the film and to the various responses it provoked amongst Indian critics, some black-and-white stills, and a reprint of Rubin's translation of the original story. Robinson includes the following information about the film's cast and production team (pp. 82-3):

DUKHI	[a chamar]	Om Puri
JHURIA	[Dukhi's wife]	Smita Patil
DHANIA	[Dukhi's daughter]	Richa Mishra
GHASIRAM	[a brahmin]	Mohan Agashe
LAKSHMI	[Ghasiram's wife]	Gita Siddharth
THE GOND		Bhaialal Hedao

Director	Satyajit Ray
Producer	Doordarshan, Government of India
Screenplay	Satyajit Ray, from a short story by Premchand
Lighting Cameraman	Soumendu Roy
Editor	Dulal Datta
Art Director	Ashoke Bose
Musical Score	Satyajit Ray

Grateful acknowledgement to Hyphen Films, London, for the shooting script on which the transcribed screenplay is based. (This script included the contextual links in English given in the text below; they describe changes of scene.)

Rupert Snell.

सद्गति

Early morning in a chamar settlement. Dukhi the chamar's house. Dukhi's wife Jhuria comes out looking for their daughter Dhania.

झुरिया धनिया ! ए धनिया ! तेरे बाबू कहाँ गए रे ?

धनिया घास काटने ।

झुरिया घास काटने ? अभी से ?

A green patch on the edge of the settlement. Dukhi is cutting grass.

झुरिया क्या हुआ ? तुम भूल गए क्या ?

दुखी —

झुरिया पंडितजी के यहाँ जाना था आज सबेरे ।

दुखी खाली-हाथ जाऊँगा क्या, कुछ भेंट-वेंट ले जाऊँगा कि नहीं ?

झुरिया यह घास भेंट के लिए है क्या ?

दुखी और क्या । तू जा अपना काम कर । उनको बिठाएगी कहाँ, यह सोच ।

झुरिया खाट पर बैठेंगे न ?

दुखी हमारी खटिया पर ?

झुरिया मुखियाजी के यहाँ से माँग लाएँगे खाट ।

दखी पगला तो नहीं गयी ! आग जलाने के लिये अंगार तक तो मिलता नहीं, और वह खटिया दे देंगे !

झुरिया तो फिर ?

दुखी धनिया से कहो महुआ का पत्ता तोड़ लाये । इसी की आसनी बना ले ।

झुरिया ठीक है ।

दुखी और पंडितजी को सीधा भी देना होगा ।

झुरिया असके लिये तो थाली लगेगी ।

दुखी महुआ पत्तों की बना ले । महुआ के पत्ते बड़े पवित्तर है । बड़े बड़े. . .

झुरिया क्या हुआ ? चक्कर आया न ?

दुखी अब ठीक है । अच्छा सुन — झुरी गोंड की लड़की को साथ ले जाना । और साह जी की दुकान से सीधे की सब सामग्री ले आना ।

झुरिया हाँ । क्या क्या ?

दुखी सेर भर आटा, आधा सेर चावल, पाव भर दाल, आधा पाव घी, नोन, हलदी । याद रहेगा ?

झुरिया हाँ ।

दुखी बोल तो ।

झुरिया एक सेर चावल . . .

दुखी सेर भर आटा !

झुरिया सेर भर आटा ।

दुखी हाँ ! आधा सेर चावल । बोल !

झुरिया आधा सेर चावल ।

दुखी हाँ ! पाव भर दाल ।

झुरिया पाव भर दाल ।

दुखी आधा पाव घी ।

झुरिया आधा पाव घी ।

दुखी नोन, हलदी ।

झुरिया नोन, हलदी ।

दुखी और पत्तल के किनारे चवन्नी रख देना । और छूना मत ।

झुरिया सुनो ! आज मत जाना । अभी बुखार से उठे हो न ? कल चले जाना ।

दुखी मुझे तो बहुत पहले चले जाना चाहिए था । इसी बुखार के मारे नहीं गया । तू फिकर मत कर । मैं ठीक हूँ ।

—

दुखी धनिया, इधर आओ । आज कौन आनेवाला है ? जानती हो ? कौन ?

धनिया पंडित जी ।

दुखी हाँ ! काहे के लिए — यह तो बता ? . . . अच्छा जा — जाके महुए के पत्ते ले आ । पत्तल बनेगी, आसनी बनेगी । खूब सारे लाना । जा । और सुन, पत्ते लाने के बाद घर पर ही रहना, पंडितजी अगर तुम्हें मिलना चाहे तो . . .

झुरिया खाके नहीं जाओगे ? सुबह से एक दाना भी नहीं गया मुँह में ।

दुखी आकर खाऊँगा, नहीं तो पंडितजी निकल जाएँ ।

झुरिया फिर जो यह चक्कर आ गई रास्ते में ?

दुखी यहाँ की सब तैयारी ठीक करके रखना !

Dukhi walks to Pandit Ghasiram the brahmin's house, carrying the bundle of grass. Ghasiram is doing his puja.

दुखी महाराज !

घासीराम कौन है ?

दुखी दुखी, महाराज । आप ही से मिलने आया हूँ ।

घासीराम काहे के लिये ?

दुखी बिटिया की सगाई कर रहा हूं महाराज । आप दया करके चले चलते और उसका साइत-सगुन बिचार देते —

घासीराम अभी ?

दुखी आप की सेवा की सब सामग्री तैयार करके आया हूँ महाराज ।

Ghasiram's ten year old son Moti has just come out with his school books. Ghasiram shouts at him.

घासीराम तू क्या खड़ा यहाँ । चल भाग यहाँ से । देर हो जायेगी ।

Moti ambles off.

घासीराम तू क्या सोचता है, मैं यहाँ खाली बैठा हूँ, कि जब जो जहाँ बुलाये उसी दम चल पड़ूं !

दुखी नहीं महाराज, मुझे पता है आप को दम लेने की भी छुट्टी नहीं, पर आप के बिना मेरी बिटिया की सगाई भी तो पक्की नहीं हो सकती ।

घासीराम देख, उधर झाड़ू पड़ी है ।

दुखी हाँ महाराज ।

घासीराम उसे ले ले और बराम्दे की सफाई कर दे ।

दुखी जी महाराज ।

घासीराम मैं आऊँगा जब मुझे फुरसत मिलेगी ।

दुखी जो हुकुम । महाराज, ये घास का गट्ठर कहाँ रख दूं ?

घासीराम गैया के सामने डाल दे ।

दुखी जी महाराज ।

Dukhi takes the grass to the cowshed, and begins sweeping the verandah.

Jhuriya is at the village shop.

साह जी का हो ?

सहेली बोल दे !

झुरिया एक सेर आटा, आधा सेर चावल, पाव भर दाल, आधा पाव घी, नोन, हलदी ।

साह जी एक सेर चावल ?

झुरिया नहीं नहीं ! आटा ! एक सेर आटा !

Ghasiram' s house. Dukhi finishes sweeping.

दुखी महाराज ! झाड़ू लगा दी महाराज ।

घासीराम अच्छा अभी ऐसा कर, बाहर घर के सामने सड़क के उस पार गोदाम है । वहाँ भूसा पड़ा है । वह उठाके भुसौली में डाल दे ।

दुखी बहुत अच्छा महाराज ।

घासीराम और सुन, दुखिया ! भूसा रखके फिर लकड़ी चीर देना । बाहर वट के नीचे कुन्दा पड़ा है । छोटे-छोटे चेले कर देना उसके । समझा ?

दुखी जी महाराज ।

Dukhi's house. Dhania has brought the mohwa leaves and calls out to her mother.

धनिया महुआ के पत्ते !

झुरिया वहाँ रख दे ।

धनिया पत्तल बनाऊं ?

झुरिया बनेगा तुझसे ?

धनिया काहे नहीं ?

झुरिया पर देख, छेद न रहे, नहीं कुल अनाज उसी रास्ते झर जायेगा ।

The verandah of Ghasiram's house. Ghasiram is seated with two other brahmins. One of them, Loknath, has had a bereavement, and Ghasiram is consoling him by quoting from the Gita.

घासीराम जैसा कि गीता में भगवान श्रीकृ ण कहते हैं —

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥

अर्थात, जिस प्रकार आदमी पुराने कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े धारण कर लेता है, उसी प्रकार आत्मा जर्जर शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेती है । इसलिए बच्चा, तुझे समझना चाहिए कि तेरी घरवाली भले शरीर से मर भी गयी हो, उसकी आत्मा जीवित है ।

लोकनाथ आप धन्य हैं, महाराज, बड़ी शान्ति मिली इस विचार से ।

घासीराम फिर काहे को अपना जी दुखाते हो । फिर ब्याह कर लो । अभी तुम जवान हो । शास्त्रों में ऐसा कहीं नहीं लिखा कि तुम दूसरा विवाह नहीं कर सकते । मुझको ही देखो । यह मेरी तीसरी पत्नी है । पहली पत्नी विवाह के सात महीने अंदर परलोक सिधारी । साल भर बाद मैंने फिर ब्याह कर लिया । तीन साल बीतते-बीतते मेरी दूसरी पत्नी नहीं रही । सांप ने काटा । करैत था । टखने पर काटा । दो घंटों में चली गयी !

Dukhi waits to draw Ghasiram's attention.

घासीराम दो बरस बाद मैंने फिर ब्याह कर लिया । तुम्हारे अपने सगे बिछुड़ने से जीवन नहीं रुकता । वह तो चलता ही रहता है ।

Ghasiram notices Dukhi.

घासीराम लकड़ी चीर डाली ?

दुखी कुल्हाड़ी कहाँ है महाराज ?

घासीराम वह. . .गोदाम में होगी ।

Dukhi goes to look for the axe. Ghasiram turns to Loknath again.

घासीराम हमारा तो धर्म है कि हम विवाह करें, और सन्तान उत्पन्न करें । पहली पत्नी से तुम्हें कोई लड़का नहीं है ।

लोकनाथ नहीं महाराज ।

घासीराम इसलिए जरूरी है कि तुम फिर ब्याह करो, और अपना वंश चलाओ !

Dukhi approaches the log and tries to chop it, but without effect. He sharpens the axe on a stone and tries again. A Gond passing by stops to watch.

गोंड लकड़ी काटना जानते हो ?

दुखी भैया, काटता तो मैं घास, अब यह लकड़ी काटना मैं क्या जानूं ?

गोंड तो फिर क्यों बेकार हलाकान होते हो ? ।

दुखी महाराज का हुकुम है भैया । उनको घर ले जाना है । बिटिया की सगाई का दिन बिचार देंगे ।

गोंड इसीलिए उन्होंने तुमको यह लकड़ी पकड़ा दी चीरने के लिए ?

दुखी मैं तो चीर भी देता, अगर पेट में कुछ चारा पड़ा होता तो । सबेरे बखत भी नहीं मिला खाने का ।

गोंड तो क्या वह तुम्हें खाने भी नहीं दे सकते, भले पैसे न दें । कहो न उनसे ?

दुखी घर चले चलें, यही क्या कम है ! खाना किस मुंह से माँगूं ?

गोंड तो फिर चलाओ कुल्हाड़ी ! चलाओ कुल्हाड़ी !

दुखी एक बीड़ी मिल जाती तो दम आ जाता । ऐसी बात नहीं कि मेरे हाथों में जोर नहीं ।

गोंड बीड़ी नहीं है तुम्हारे पास ?

दुखी नहीं ।

गोंड तो फिर मेरे साथ चलो ।

दुखी कहाँ ?

गोंड चलो न ! रखो कुल्हाड़ी ।

Dukhi's house. Jhuriya and Dhaniya have nearly finished making the mat.

झुरिया पता नहीं इतनी देर कैसे हो गई । धनिया, जा, सड़क पर देखके आ ।

धनिया कोई आता नहीं दीखे अम्मा ।

The Gond's house. The Gond comes out with pipe and tobacco.

गोंड लो । आगी तो नहीं है ।

दुखी कोई बात नहीं । पंडिताइन जी से ले लूँगा ।

गोंड तो जाओ । मैं लौटते हुए फिर मिलूंगा ।

Dukhi walks back to the brahmin's house. Ghasiram has sat down to his meal.

दुखी महाराज !

लक्ष्मी यह बार बार क्यों आ रहा है जी ?

घासीराम मुझको अपने घर ले जायेगा । उसकी बिटिया की सगाई का दिन विचारना है ।

लक्ष्मी इस दुपहरिया में जाओगे ?

घासीराम मैंने उसे काम दे दिया है । पहले वह तो हो ।

लक्ष्मी क्या काम ?

घासीराम लकड़ी चीरने को कहा है ।

दुखी चिलम के लिए थोड़ी आगी मिल जाती महाराज !

लक्ष्मी वह तो आगी माँग रहा है ।

घासीराम तो दे दो न थोड़ी-सी ।

लक्ष्मी तुम्हें धरम-करम किसी बात की सुध-बुध ही नहीं रही । चमार हो, धोबी हो, पासी हो, मुंह उठाये घर में चला आये । हिन्दू का घर न हुआ, कोई सराय हुई । उसे कह दो जी कि चला जाय यहाँ से, नहीं मैं लुआठी उठाके मुंह में लगा दूंगी ।

घासीराम वह हमारा तो काम कर रहा है न ? इसके लिए कोई मजदूर लगाया होता तो कम से कम एक रुपैया देना पड़ता उसको । दे दो न थोड़ी-सी आगी ।

लक्ष्मी वह दुबारा घर के अंदर आया तो मुंह झुलस दूंगी !

दुखी छमा करें, माई, बड़ी भूल हुई मुझसे, घर के अंदर चला आया । इतने मूरख न होते तो लात-जूता क्यों खाते !

Lakshmi reacts to Dukhi's apology. She seems to soften a bit. Ghasiram continues to eat.

लक्ष्मी चमरवा को कुछ खाना मिला ?

घासीराम शायद न खाया हो । यहीं तो है सबेरे से ।

लक्ष्मी खाली पेट लकड़ी कैसे चीरेगा ?

घासीराम तो दे दो न कुछ खाने को ।

लक्ष्मी क्या ?

घासीराम मैं क्या जानूं ? कुछ बचा नहीं है ?

लक्ष्मी दो-चार रोटियाँ होंगी ।

घासीराम दो-चार से क्या होगा ? चमार है, कम से कम सेर भर तो चाहिए उनको !

लक्ष्मी तो रहने दो उसे । इस गरमी में कौन मरे !

Dukhi has a smoke. The he tackles the log again like a man possessed, muttering under his breath.

दुखी चीर जाऊँगा तेरे को, चाहे मेरी जान ही तो न निकल जाय, चीर जाऊँगा । हरामजादी ! छोड़ूँगा नहीं ! छोड़ूँगा नहीं तेरे को ! . . . भाड़ में जाओ !

Dukhi suddenly loses his temper and flings the axe away. It nearly hits a brahmin passer-by.

ब्राह्मण यह क्या हो रहा है ?

दुखी छमा करना महाराज, निगोड़ी हाथ से फिसल गयी ! आगे फिर नहीं होगा, महाराज !

Still horrified, the brahmin meets another brahmin on his way to the well.

ब्राह्मण २ क्या हुआ, भगवानदास ? क्या ?

ब्राह्मण १ मुझे कुल्हाड़ी फेंककर मारी !

ब्राह्मण २ किसने ?

ब्राह्मण १ वह, वह चमार !

ब्राह्मण २ शिव शिव शिव ! पर क्यों ?

ब्राह्मण १ पगला गया होगा ! इधर मत आना ! उधर ही रहो ! उधर ही रहो ! इधर मत आना !

Dukhi goes back near the log, suddenly forlorn. He gives way to a fit of sobbing.

Dukhi's house. Dhania breaks off a game of hopscotch to see if her father is returning.

Ghasiram's house. Ghasiram wakes up and goes out to see what Dukhi is doing. Dukhi has fallen asleep.

घासीराम अरे ! यहाँ सोने को आया क्या ? दुखिया ! क्या हुआ ?

दुखी सुबह से कुछ खाया नहीं महाराज ।

घासीराम तो क्या ? काम पूरा करके अपने घर जाना और खाना डटके । लकड़ी तो अभी ज्यों की त्यों पड़ी है । फिर साइत भी वैसे ही निकलेगा । मुझे दोष मत देना ! चलो, शुरू कर । . . . हाथ में तो जैसे दम ही नहीं । लगा कसके ! हन-हनके मारना ! जब तक फट न जाये । हाँ !

Moti returns from school and watches Dukhi as he attacks the log with great fervour. A tremendous blow makes a crack in the wood, but the next moment Dukhi falls on his face. Moti runs to his father.

मोती चमरवा मर गया, चमरवा मर गया !

घासीराम क्या ?

मोती वह चमरवा गिरा पड़ा है, मुंह के बल —

घासीराम मर गया ?

मोती हाँ, वह. . . लकड़ी के पास . . . ज़मीन के ऊपर . . . मुँह के बल लेटा है ।

घासीराम क्या उलटा-सीधा बक रहा है बे ! सो गया होगा ।

Ghasiram goes out to investigate.

घासीराम दुखिया, फिर सो गया क्या ?

Dukhi doesn't move. Ghasiram realises he is dead and steps back.

The Gond watches from behind a bush. Ghasiram suddenly notices Moti standing by.

घासीराम अरे दुख.... तू क्या खड़ा है यहाँ ! जा खेल ! तुलसी के घर चला जा ! चल, चल !

Ghasiram's hurries back into the house and shakes his wife out of her sleep.

घासीराम सुनती हो, अजी, सुनती हो ! ग़ज़ब हो गया ।

लक्ष्मी क्या हुआ ?

घासीराम दुखिया मर गया ।

लक्ष्मी कौन दुखिया ?

घासीराम अरे वह चमार !

लक्ष्मी चमार मर गया ? लेकिन वह तो लकड़ी चीर रहा था !

घासीराम चीरते-चीरते ही तो मर गया !

लक्ष्मी सो तो नहीं न गया ?

घासीराम मैं क्या जिन्दा-मुर्दा नहीं समझता ?

लक्ष्मी तो तुम क्यों घबड़ा रहे हो जी ? चमार बस्ती में खबर कर दो कि आकर अपना मुर्दा उठा ले जायं ।

घासीराम बात ऐसी है कि . . .हमने . . . मेरा मतलब यह है कि . . .

लक्ष्मी क्यों आयं-बायं बक रहे हो जी ! लकड़ी चीर रहा था, मर गया । बीमार रहा होगा । कुछ लोग नींद में नहीं मरते ? फिर ? तुम क्या जानते थे कि वह मर जायेगा ?

घासीराम नहीं, बिलकुल नहीं ।

लक्ष्मी तो फिर जाओ, उन्हें कहला दो ।

The Gond has come close to Dukhi. He casts a contemptuous glance in the direction of Ghasiram's house.

गोंड बांमन देवता ! साधु-महात्मा !

The Gond makes off quickly. On the road, an old brahmin stands looking suspiciously at Dukhi's inert body.

ब्राह्मण क्या हुआ ?

गोंड मर गया ।

ब्राह्मण कौन ?

गोंड दुखी चमार ।

The brahmin turns round and sees a group approaching. He holds up his hand.

ब्राह्मण चमार मर गया !

The chamar settlement. A crowd has gathered to listen to the Gond.

गोंड लकड़ी चीरते-चीरते ही मर गया । इन्ही बांमन देवता ने जोर जबरदस्ती उससे काम कराया । इसीलिये जिम्मेदारी उन्ही की है । मैं जानता हूँ । मैंने सब कुछ अपनी आंखों से देखा है । वह यहाँ आयेंगे, तुम लोगों से मुर्दा उठाने के लिए कहेंगे । लेकिन उनकी एक भी मत सुनना । लाश को छूना भर मत । नहीं तो पुलिस पकड़कर ले जायगी । यह पुलिस का मामला है । क्योंकि इन्हीं बामन देवता ने सब किया है ।

Now Ghasiram arrives at the chamar settlement, looking shaken.

घासीराम एक. . . बात सुनो भैया — अभी थोड़ी देर पहले, मेरे घर के सामने, दुखी मर गया ।

Jhuriya approaches, speechless with shock. The chamars stare at Ghasiram without a word.

घासीराम मैं उसके साथ उसके घर आनेवाला था, कि वह अचानक मर गया । बात ऐसी है . . .कि लाश कब तक पड़ेगी वहाँ ।

झुरिया हे भगवान ! हे भगवान ! अब मेरा क्या होगा ! मैं जानती थी — मैं जानती थी ! वह मेरे . . . मैं जानती थी !

Two women try to console her.

चमारिन झुरिया बस भी कर ! बस भी कर !

झुरिया मैं जानती थी ! मैं जानती थी !

घासीराम इसलिये, उसे उठाने का कुछ . . .

The chamars just keep looking at Ghasiram. He loses his nerve and starts walking back. Dhaniya weeps.

A crowd of brahmins has gathered on the road outside Ghasiram's house. One of them speaks to Ghasiram.

ब्राह्मण बड़ा गंभीर मामला है, पंडितजी ! जब तक मुर्दा वहाँ से नहीं हटे, हम लोग उस रास्ते पानी लेने नहीं जा सकते । आख़िर पानी बिना कब तक चलेगा ? कैसे ?

घासीराम मैं अभी चमार बस्ती जाकर उनसे कह आया हूँ । वह आते ही होंगे । आप ऐसा कीजिए, अपने अपने घर जाइए, घंटे भर बाद फिर आइए । जाइए ।

Ghasiram's bedroom. Ghasiram comes in. Lakshmi has been waiting for him anxiously. A rainstorm begins.

लक्ष्मी क्यों ? क्या हुआ ?

घासीराम वह नहीं सुनते ।

लक्ष्मी नहीं सुनते ? क्या मतलब ?

घासीराम वह लाश नहीं हटायेंगे ।

लक्ष्मी तो क्या हम हटायेंगे ?

घासीराम वह सब मुझसे मत पूछो ।

लक्ष्मी तुमने उनसे क्या कहा ?

घासीराम क्या, जो कहना था वही कहा — दुखी मर गया है, तुम जाकर लाश उठा लाओ ।

लक्ष्मी फिर ?

घासीराम फिर क्या ? उन्होंने मेरी सुनी ही नहीं । उलटे मुझे लाल-लाल दिखायीं । फिर मैं वहाँ खड़ा नहीं रह सका ।

लक्ष्मी बारिश हो रही है, और अभी लाश यहीं पड़ी है ।

Jhuria comes up in the pouring rain, and turns the body of her husband.

झुरिया सुनते हो ! सुनते हो ! खोलो आँखें ! आँखें खोलो ! हे भगवान ! ये किसका सराप लगा मुझे । दो दिन बाद बिटिया का ब्याह ! बोले पंडितजी को बुला लाऊँ । कौन जानता था कि पलटेंगे नहीं ? कितने इतने कठकलेजी हो गये तुम ? सोचा ही नहीं, हमारे ऊपर क्या बीतेगी ! महाराज ! महाराज ! महाराज !

Jhuriya throws herself down at Ghasiram's door.

झुरिया आपने इससे लकड़ी चीरवायी महाराज ! ऐसी कड़ी मेहनत करवायी जब कि वह अभी-अभी बुखार से उठा था । उसके पेट में खाना नहीं था । बदन में ताकत नहीं थी । आपका क्या बिगाड़ा था, महाराज, क्या बिगाड़ा था ? क्यों इतने निर्दयी हो गए ?

It is night. Ghasiram's bedroom. Lakshmi sits on the bed, while Ghasiram paces up and down.

लक्ष्मी तुम्हारी मत मारी गयी थी कि उसे लकड़ी चीरने को कहा ।

घासीराम मैं क्या जानता था वह खाली पेट आया है ? कहा तो था तुमसे, दे दो कुछ खाने को ।

लक्ष्मी तुमने कहा था ? या मैंने कहा था !

घासीराम पर दिया तो नहीं तुमने । अब जो दोष है सब मेरा है ?

लक्ष्मी कितनी कड़ी मेहनत करवायी उससे !

घासीराम मेहनत क्या लोग करते नहीं ? सब मर थोड़े ही जाते हैं ।

लक्ष्मी कहीं पुलिस को पता चल गया तो ?

घासीराम कैसे पता चलेगा ? इतनी बारिश में तो आने से रहे !

लक्ष्मी मुर्दा गंधाने लगेगा ! तुम उसे उठा नहीं सकते ? और उठानेवाला तुम्हें मिलेगा नहीं ! फिर ?

घासीराम अब तुम अपना बक-बक बंद करो न ! सोचने दो मुझे ज़रा — सोचने दो ! सोचने दो !

Dawn of the next day. The rain has stopped, but water drips from the leaves of the trees. Ghasiram gingerly dangles a noose of rope round Dukhi's ankle and drags the body off across a field, dumping it far from the house. Then, freshly bathed, he mumbles prayers and sprinkles holy water to purify the place where Dukhi died.

THE END